International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 158-163

वेद एवं महाभारत में महर्षि अगस्त्य

डॉ. रेनू रानी शर्मा*

प्रस्तावना

महर्षि अगस्त्य का उल्लेख भारतीय साहित्य में प्राचीन युग से चला आ रहा है। वैदिक साहित्य में इस आख्यान के अन्तर्गत अगस्त्य–मरुत् संवाद, अगस्त्य – लोपामुद्रा संवाद तथा अगस्त्य के जन्म से सम्बद्ध महत्वपूर्ण परिज्ञान प्राप्त होता है। इनका किसी न किसी रूप में विस्तार लौकिक साहित्य में भी देखा गया है। लौकिक साहित्य में अगस्त्य द्वारा कालकेय दैत्यों का वध करने के लिए समुद्रपान करना, सूर्य व चन्द्र की गति को रोकने वाले विन्ध्य पर्वत को बढ़ने से रोकना, इसी प्रसंग में दक्षिण दिशा को प्रस्थान करना, पितरों के उद्धार के लिए विवाह करना तथा इन्द्र से द्रोहपूर्ण सम्बन्ध रखना आदि कुछ नवीन सामग्री से हमारा परिचय होता है।

संहिताओं में प्राप्त विवरण

ऋग्वेद

अगस्त्य से सम्बन्ध रखने वाले सत्ताइस सूंक्तों में से अपने को कहीं 'सुमेधा'[1] कहीं पर 'लोपामुद्रा का पति' एवं कहीं 'मान्यमन्दार्य'[3] बताते हैं। परन्तु यहाँ जिस अगस्त्य से हमारा विशेष सम्बन्ध है वे लोपामुद्रा के पति हैं। ऋग्वेद के मन्त्रद्रष्टा ऋषियों में महर्षि अगस्त्य भी एक ऋषि हैं। ऋग्वेद प्रथम मण्डल के सत्ताइस सूक्तों के वे दृष्टा बताये गये हैं। इन सूंक्तों में कुल 239 मन्त्र हैं। जिसमें से 220 मन्त्रों के दृष्टा महर्षि अगस्त्य हैं[4] तथा अवशिष्ट 19 मन्त्रों के दृष्टा इन्द्र, मरुत् ,लोपामुद्रा एवं ब्रहमचारी शिष्य हैं। इन सूक्तों में अगस्त्य द्वारा इन्द्र को शान्त करने के साथ साथ उनके व लोपामुद्रा के बीच हुए संवाद का भी उल्लेख है। यहाँ इन्द्र, अश्विनी कुमार, मरुद्गण, द्यावा, पृथिवी, सुमेधा विश्वेदेवाः, अग्नि, तृण एवं सूर्य की स्तुति हुयी है।

ऋग्वेद में महर्षि अगस्त्य का पराक्रम सर्वप्रथम वहाँ प्रदर्ि ात किया गया है जहाँ वे इन्द्र और मरूतों से समझौता कराते हैं। एक बार मरूतों को ही हवि प्रदान करने के इनके प्रस्ताव से इन्द्र रुष्ट हो गये थे किन्तु इन्होनें इन्द्र को ये बताकर कि मरुद्गण उनके भाई हैं उन्हें मारने से रोक दिया। शान्त कर दिया ऋग्वेद के तीन सूक्तों में इस घटना का उल्लेख हुआ है।[5] इसका सारांश निम्न प्रकार है–

एक दिन मार्ग में संचरण करते हुए इन्द्र एवं मरुत् का साक्षात्कार होता है और वे परस्पर एक दूसरे की स्तुति करते हैं।[6] अगस्त्य इस स्थिति को तपोबल से जान लेते हैं। और इन्द्र के लिए रखी हवि मरूतों को देने की सोचते हैं इन्द्र अर्थ के विषय में शुद्ध भाव न रखने वाले अगस्त्य की निन्दा करते हैं।[7] परन्तु अन्त में इंद्र को भाांत कर अगस्त्य मरूतों को हवि प्रदान करते हैं।[8] इस प्रकार से यहाँ अगस्त्य का शक्तिपूर्ण रूप उपजा हैं। आगे चलकर महाभारत एवं अन्य लौकिक साहित्य में भी हमें अगस्त्य एवं इन्द्र में रहने वाली स्पर्धा का उल्लेख मिलता है।

* एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गो.ग.द. सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल, हरियाणा।

आर्ष महोदय ने अगस्त्य और इन्द्र संवाद का आधिदैविक दृष्टि से विवेचन करते हुए अगस्त्य को भीमोश्मा, इन्द्र को सूर्य तथा मरुतों को हवाऐं बताया है। इसी कथा की आधिभौतिक व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया है कि औषधियों का संग्रह कृषि द्वारा करने से अगस्त्य भूमिहार (जंमीदार) हैं।[9] इन्द्र राष्ट्रपति हैं और मरूत् राजपुत्र हैं। उन्होंने अगस्त्य को स्पष्ट करते हुए कहा है ''अगं वृक्षमात्रं वनस्पतिवर्गस्यायति संग्रहातीत्यगस्त्य'' अर्थात वनस्पति का संग्रहीत करने वाला अगस्त्य है। आध्यात्मिक दृष्टि से उनके मत में अन्नादि औषधियों को आहार द्वारा संग्रह करने से अगस्त्य उदरस्थ, जठराग्नि, इन्द्र जीवात्मा तथा मरुद्गण प्राण हैं। आलोचनात्मक दृष्टि से लेखान की ये व्याख्याऐं वैज्ञानिक मानी जा सकती है परन्तु एक बार अगस्त्य का ऋशित्व स्वीकार कर लिए जाने पर ये एतिहासिक व्यक्ति बन जाते हैं। उस अवस्था में भौतिक एवं दैविक पक्ष को प्रधानता देकर रूपक के रूप में इनकी व्याख्या युक्ति युक्त नहीं लगती।

ऋग्वेद के ही एक अन्य स्थल पर महर्षि अगस्त्य के दाम्पत्य सम्बन्ध पर प्रकाश पड़ता है। यहाँ उनकी पत्नी लोपामुद्रा उन्हें सांसारिक भोगों को भोगने का प्रलोभन देती हैं [10] इन मन्त्रों के अध्ययन से अगस्त्य का संयमी, रुद्धवीर्य एवं स्वाध्यायपरायण रूप हमारे समक्ष आता है। लोपामुद्रा अगस्त्य की इस मनः स्थिति के प्रति आक्षेपोक्तियाँ कहती है। अगस्त्य पत्नी के आगे झुक जाते हैं और भोगी पति का रूप प्राप्त कर लेते हैं तथा तपोमय जीवन भी त्यागते नहीं हैं। लोपामुद्रा एवं अगस्त्य का यह सम्बन्ध पति–पत्नी होने के कारण आपत्तिजनक नहीं है। अगस्त्य व लोपामुद्रा के इस संवाद को उनके शिष्य सुनते हैं और इसलिए उसे पातक समझते हुए सूक्त की दो ऋचाऐं प्रायि चत् के रूप में पढते हैं।[11]

ऋग्वेद संहिता के सातवें मण्डल में वशिष्ठ जन्म प्रसंग में अगस्त्य के जन्म का भी वर्णन है।[12] वैदिकोत्तर साहित्य में प्राप्त होने वाला अगस्त्य के जन्म का विवरण वेद के इस स्थल से उद्भूत हुआ लगता है। प्रथम मंत्र में हमें स्पष्ट रूपेण वशिष्ठ के जन्म तथा मन्त्र की दूसरी पंक्ति में वशिष्ठ के साथ अगस्त्य के जन्म का उल्लेख भी हैं। [13] सायण ने मन्त्र की द्वितीय पंक्ति को इस प्रकार स्पष्ट किया है।

''उत अपि च यत् यदा अगस्त्य दिश निवेशनान्मित्रा वरुणां आवां जनयिश्याव इत्येतस्मात् पूर्वावस्थानात् त्वां आजभार आजहार।''[14]

यहाँ प्रस्तुत किया दूसरा मन्त्र भी एक प्रकार से अगस्त्य के जन्म पर ही स्पष्ट रूपेण प्रकाश डालता है परन्तु सायण भाश्य में वशिष्ठ व अगस्त्य दोनों के जन्म को स्पष्ट किया गया है। मित्रावरूण यज्ञ में उर्वशी को देखते हैं उनका वीर्य स्खलित होकर कुम्भ, जल व थल में गिरता है जिससे क्रमशः अगस्त्य, मत्स्य एवं वशिष्ठ उत्पन्न होते हैं।[15] अगस्त्य के कुम्भजात होने का स्पश्टीकरण भी यहाँ हो गया है जिसे सायण ने इस प्रकार स्पश्ट किया है– ''तत् वासतोवरात् कुम्भात् मध्यात् – मध्यात् अगस्त्यतः मानः शमी प्रमाणः उदियाथ प्रार्दुबभूव।[16] ऋ0 1.11.7.41 में ही अगस्त्य के कुम्भजात होने का उल्लेख मिलता है– ''सूनोः कुम्भात् प्रसृतस्य अगस्त्यस्य''

तैत्तिरीय संहिता

तैत्तिरीय संहिता में इन्द्र एवं अगस्त्य के पारस्परिक कलह का उल्लेख हुआ है।[17]

- **काठक संहिता** – काठक संहिता में भी अगस्त्य और इन्द्र के द्रोह का उल्लेख मिलता है।यहाँ अगस्त्य मरुतों के लिए जिन वृषभों को रखते हैं इन्द्र उनका अपहरण करते हैं और मरूत् वज्र से इन्द्र पर आक्रमण करते हैं। यहाँ पर श्रृग्वेद के वर्णन से अन्तर हो गया है क्योंकि इन्द्र अगस्त्य में भाव शुद्धि का अभाव देखते हैं उनकी भर्तस्ना करते हैं और स्वयं उन्हें शान्त कर देते हैं। एक प्रकार से काठक संहिता में द्रोह इन्द्र तथा मरुतों का हो जाता है एवं अगस्त्य कयाशुमीय सूक्त से उन्हें शान्त करते हैं[18]
- **मैत्रामणी संहिता** – मैत्रायणी संहिता का विवरण काठक संहिता के ही समान है परन्तु मरुतों का लक्ष्य कौन था इन्द्र या अगस्त्य इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं है। मरुतों द्वारा केवल वज्र उठाने एवं उन्हें शान्त किये जाने का संकेत यहाँ हुआ है।[19]

ब्राह्मण साहित्य में ऋषि अगस्त्य

- **एतरेय ब्राह्मण** – एतरेय ब्राह्मण में हमें इन्द्र–मरूत् और अगस्त्य में स्थापित हुयी पारस्परिक शान्ति का उल्लेख मिलता है द्रोह का नहीं[20] एतरेय ब्राह्मण की सायण कृत व्याख्या में कयाशुमीय सूक्त के महत्व को वर्णित करते हुए इसे एकमत्य, सन्तान तथा दीर्घायुप्रदान करने वाला बताया है तथा इसके अनुष्ठान से अगस्त्य, मरुद्गण व इन्द्र को संज्ञान प्राप्त होता है और वे परस्पर एकमत्य हो जाते हैं[20]
- **तैत्तिरीय ब्राह्मण** – कृष्ण यजुर्वेद के इस महत्वपूर्ण ब्राह्मण में अगस्त्य, इन्द्र व मरुतों के परस्पर वैमनस्य एवं अंत में मित्रता का वर्णन है।[21]

महाभारत में महर्षि अगस्त्य

यहाँ पर अगस्त्य से सम्बन्धित इन्द्र वातापि की कथा, अगस्त्य के दक्षिण दिक् गमन तथा समुद्रपान की कथा का विस्तृत वर्णन है इस पर वर्णित अधिकांश कथाऐं अवैदिक हैं। लोपामुद्रा तथा अगस्त्य का दाम्पत्य सम्बन्ध वेद के वर्णन का स्मरण कराता है किन्तु यहाँ पर उपलब्ध सामग्री वेद से कुछ भिन्न हो गयी है। तीर्थयात्रा पर निकले युधिष्ठिर अगस्त्याश्रम के समीप पहुँचकर लोमश से अगस्त्य के चरित्र के विषय में प्रश्न करते हैं इसपर लोमश उन्हें सर्वप्रथम वातापि को नष्ट करने का वृतान्त एवं अगस्त्य से लोपामुद्रा का विवाह इस प्रकार वर्णित करते हैं–

- वनपर्व में इल्वल और वातापि का वासस्थान मणिमति नगरी बताये गये हैं।
- इल्वल ब्राह्मणों के प्रति द्रोहवृति का कारण ब्राह्मण से इन्द्र तुल्य तेजस्वी पुत्र की याचना किये जाने पर भी ब्राहमण द्वारा इल्वल की अभिलाषा पूर्ण न करना बताता है।[23]
- इल्वल द्वारा वातापि को बकरे की देह में परिवर्तित कर ब्राह्मणों के लिए भोजन में परोस दिया जाना उसकी मायिक शक्ति को दर्शाता है।[24]
- वनपर्व में अगस्त्य–लोपामुद्रा की चर्चा करते हुए बताया गया है कि एकबार भ्रमण करते हुए अगस्त्य को मार्ग में एक गड्ढे में लटके हुए अपने पितर दृष्टिगोचर होते हैं वे अगस्त्य से अनुरोध करते हैं कि वे विवाह कर सन्तानोंत्पादन करें। जिससे उनकी नरक से मुक्ति हो सके।[25] यहाँ पर उल्लिखित अगस्त्य का ब्रहमचारी रूप वेद के अगस्त्य का स्मरण कराता है अगस्त्य पितरों की आकांक्षा पूर्ति के लिए एक अनुरूप पत्नी का अनुसंधान करते हैं परन्तु योग्य पत्नी न मिलने पर प्रत्येक जन्तु के उत्तम अंगों की उद्भावना कर एक परम सुन्दर स्त्री का निर्माण करते है[26] तथा पुत्र के लिए तपस्या कर रहे विदर्भराज के लिए उसे प्रदान करते हैं। कालान्तर में अगस्त्य लोपामुद्रा को विवाह योग्य जान विदर्भराज से उसकी याचना करते हैं पुत्री की इच्छा पर विदर्भराज उसे अगस्त्य के लिए प्रदान कर देते है।[27] विवाहोपरान्त लोपामुद्रा साधारण वस्त्र धारण कर पति के साथ गंगातट पर तपस्या में लीन हो जाती है।[28] कुछ काल पश्चात अगस्त्य सन्तानोत्पादन हेतु ऋतुस्नाता अपनी पत्नी को समागमार्थ बुलाते है, परंतु वह इस जीर्ण भीर्ण कशाय स्थिति में उनसे समागम करना अस्वीकार कर देती हैं और धन जुटाकर एश्वर्य पूर्ण स्थिति उत्पन्न करने के लिए कहती हैं।[29] अपनी तपः शक्ति से धन जुटाने में समर्थ ऋषि तपक्षय के भय से श्रुतर्वा नामक राजा के पास जाते हैं परन्तु उनकी आय व्यय समान देख धन लेना अस्वीकार कर देते है। अगस्त्य की यह घटना अपने आप में मौलिकता पूर्ण है।

एक बार पुनः इल्वल वातापि वध को इस प्रसंग में स्थान मिला है। अगस्त्य तीनों नरेशों के परामर्श से धन याचना के लिए इल्वल के पास जाते हैं तथा इल्वल द्वारा छाग बनाया गया, वातापि भोजन में परोसा जाता है। अगस्त्य राजाओं को निर्भय रहने का आश्वासन देकर उस भोजन को स्वयं खाकर पचा लेते हैं। इल्वल कहता है कि अगर वह यह जान लें कि वह कितना धन उन्हें देना चाहता है तो वह अवश्य धन दे देगा। अगस्त्य कहते हैं कि वह प्रत्येक राजा को दस–दस सहस्त्र गायें तथा दस– दस सहस्त्र स्वर्णमुद्राऐं तथा उन्हें दो तीव्रगामी अ व तथा राजाओं से दुगनी धनराशि देना चाहता है। अगस्त्य जब धन

लेकर प्रस्थान करते हैं तो इल्वल उन पर पीछे से आक्रमण करता है तब राक्षस को वहीं भस्म कर आश्रम लौटते हैं और अपनी पत्नी से 'इध्मवाह' नामक पुत्र उत्पन्न करते हैं जिससे पितरों को उत्तम लोक प्राप्त होते हैं।[30]

वनपर्व में ही इसी क्रम में अगस्त्य के शौर्य को प्रतिपादित करने वाली समुद्र शोषण की घटना का उल्लेख हुआ है। इस घटना की मुख्य बातें निम्न प्रकार हैः–

- सतयुग में कालकेय दैत्यों द्वारा देवता सताए जाते है।
- इन्द्र कालकेय दैत्यों के नेता व्रत्रासुर का वध करते हैं।
- अपने नेता की मृत्युपरान्त दैत्य जल मे छिप जाते हैं तथा रात्रि में मुनि आश्रमों में जाकर मुनियों की हत्या करने लगते है।
- देवताओं को प्रसन्न करने लिए अगस्त्य समुद्र का पान कर लेते है। परिणाम स्वरूप कुछ दैत्यों का वध हो जाता हैं। तथा कुछ पाताल में प्रविष्ट हो जाते है[31]

रघुनन्दन शर्मा ने इस समुद्र पान की घटना के विषय में कहा है कि अगस्त्य ऋषि प्रसिद्ध है परन्तु अगस्त्य तारा भी प्रसिद्ध है जो वर्षा के अन्त में दिखाई देता है। उसके उदय होते ही वर्षा बन्द हो जाती है। इस पर यह कथा गढ़ी है कि अगस्त्य ने समुद्र पी लिया। लेखक का यह कथन रूपक के माध्यम से अगस्त्योपाख्यान की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करता है। [32]

ब्रहमा जी के परामर्श से देवता अगस्त्य के पास जाते हैं उनसे समुद्र शोषण का अनुरोध करते हैं। इसी अनुरोध क्रम में अगस्त्य की स्तुति एवं प्रशंसा करते हुए उनके दक्षिण गमन की कथा का भी उल्लेख हो गया है। इसकी मुख्य वर्ण्य सामग्री निम्न प्रकार हैः–

सूर्यदेव उदय व अस्त के समय मेरु पर्वत की परिक्रमा करते हैं। यह देख विन्ध्य गिरि सूर्य से उसकी भी नित्य प्रति परिक्रमा करने के लिए कहता है सूर्य अपने द्वारा निर्वाह किये जा रहे प्राकृतिक नियमों से विन्ध्य का अवगत कराते हैं तथा उसकी परिक्रमा करते में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। कुपित विन्ध्य गिरि उपर उठकर सूर्य–चन्द्र का मार्ग रोकने का प्रयत्न करने लगते हैं। इस पर देवता अगस्त्य से सहायता माँगते हैं। अगस्त्य लोपामुद्रा सहित विन्ध्य के पास जाकर कहते हैं ''मैं कार्यवशात् दक्षिण दिशा में जा रहा हूँ तुम मुझे मार्ग देकर मेरे लौटने की प्रतीक्षा करो। अगस्त्य ऋषि का दक्षिणवास महाभारत में अनेक स्थलों पर वर्णित हुआ है। अगस्त्य तब से नहीं लौटे ना ही विन्ध्य आगे बढ़ा।[33] वासुदेव शरण अग्रवाल के मत मे अगस्त्य का वनगमन का वृतान्त किसी एतेहासिक प्रसंग की ओर संकेत करता है। उनके दृष्टिकोंण से इसमें आर्यो का दक्षिण में प्रथम प्रवे ा निर्दिश्ट है। सांस्कृतिक इतिहास का भी यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि अगस्त्य ऋषि ने दकन के पौडीगाए पर्वत पर अपना आश्रम स्थापित किया। अगस्त्य जन्म का महाभारत में विस्तृत विवेचन तो नहीं हुआ किन्तु उनके मित्रावरुण नन्दन होने का उल्लेख अवश्य हो गया है।[34]

महाभारतकार द्वारा वैदिक आख्यान से किये परिवर्तन एवं प्रयोजन

वैदिक साहित्य में अगस्तय एवं इन्द्र 'बीच चल रहे पारस्परिक कलह का विस्तार वैदिकोत्तर साहित्य मे भी हुआ है किन्तु वैदिक साहित्य से यहाँ कुछ भिन्नताऐं अवश्य हो गयी हैं। महाभारत आश्वमेधिक पर्व में अगस्त्य सत्र का उल्लेख हुआ है जिसकी मुख्य बाते निम्न प्रकार हैं।

- विश्वकल्याण में तत्पर ऋषि अगस्त्य 12 वर्षों में समाप्त होने वाले सत्र की दीक्षा लेकर पुरोहित को बुलाते हैं।
- अगस्त्य द्वारा यथा ाक्ति अन्न संग्रहीतकर लेने पर यज्ञ प्रारम्भ होता है किन्तु इसी बीच इन्द्र वर्षा बन्द कर देते हैं।
- यह देख मुनिवर्ग चिन्तित होता है कि बारह वर्षीय यज्ञ की समाप्ति किस प्रकार होगी। इस पर अगस्त्य भी निश्चय करते हैं कि वह चिन्तन मात्र से मानसिक यज्ञ करेंगे। तब अगस्त्य चिन्तन मात्र से समस्त

लोकों की सम्पत्ति, अप्सरावर्ग तथा देवताओं को यज्ञस्थल पर बुला लेते हैं। अन्य मुनिगण भी मानसिक यज्ञ में पूर्ण सहयोग करते हैं। तभी इन्द्र अगस्त्य का तपोबल देखकर वर्षा प्रारम्भ कर देते हैं यज्ञ की निर्विघ्नि समाप्ति पर अगस्त्य मुनियों को विधिवत् प्रसन्न कर विदा करते हैं।[35]

उपर्युक्त विवरण में स्पष्ट है कि वैदिक कथा में वर्णित विरोध आश्वमेधिक पर्व में भी पूर्ववत् बना रहा। किन्तु स्थिति में यहाँ अन्तर हो गया है कि वेद में अगस्त्य इन्द्र को प्रसन्न करते हैं तो यहाँ इन्द्र अगस्त्य को। वैदिक काल में इन्द्र को एक पराक्रमी व प्रतापी राजा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुयी है[36] किन्तु वैदिकोत्तर काल में देवताओं पर आर्श तेज ने विजय पाई। इसका ज्वलंत उदाहरण है अगस्त्य की इन्द्र पर विजय। विण्टरनिट्ज महोदय का मत है कि अगस्त्य उपाख्यान देवताओं और मनुश्यों पर ऋशियों के महत्व और पराक्रम का सूचक हैं।[37]

सन्दर्भ

1. ऋग्वेद– 1.185.10
2. ऋग्वेद– 1.179
3. ऋग्वेद – 1.165.16, 155.15, 167.11, 168.10
4. ऋग्वेद – 1.165.191
5. ऋग्वेद– 165.13.15, 166.15, 167.11, 168.10 169.8, 170.2–5, 171.13, 174.10, 175.6, 177.5, 179.5, 180.19, 181.9, 182.8, 183.6,184.6 185.11, 186.11, 187.11, 189.8, 190.8, 191.16,
6. ऋग्वेद – 1.165, 170, 171
7. ऋग्वेद– 1.165
8. ऋग्वेद – 1.166–69
9. प्रियरत्न आर्श, वेद में इतिहास नहीं – पृ0 84–85
10. ऋ0 – 1.1.179
11. ऋग्वेद– 1.179.2, वही 1.179.3–4
12. इमं नु सोममन्तितो हृत्सु .... ऋ0 1.179.51 अगस्त्य खनमानः खनित्रे ऋ0 1.179.5
13. ऋ0 7.33.10 पर सायण भाष्य
14. उतासी मैत्रावरुणो वशिष्ठोर्वश्या......................... ऋ0 7.33.11
15. ऋ0 7.33 पर सायणभाष्य
16. ततो ह मान उदीयायमध्यात् ऋ0 7.33.13
17. सजनीय भास्यं विहव्य भास्यमगस्त्यस्य.................. तै0 सं0 7.5.5.2
18. अगस्त्यों वै मरूद्मय यतमुक्ष्णः प्र नीन प्रोक्षत्। तानिन्द्रयालभत् तं .... का0 सं0 10–11
19. अगस्त्यो वै मरूद्भ्यः अक्ष्ण प्रोक्षत् तानिन्द्रयालभत् ते। वज्रमादाभ्युपतंस्तान वा एतेनाशमयत्।। मै0 सं0 2.1.8
20. यत्कयाशुमीयमेतेन ह वा इन्द्रोऽगस्त्यो मरूतस्ते। समजानत् यत् कयाशुमीयं शंसति .... ऐ0 ब्रा0 5.16.1
21. अगरत्यो मरूद्भ्येः उक्ष्ण प्रोक्षत्। तनिन्द्र आदत्त। त एवं वज्रमुदयत्वाभ्यायन्त तानगस्त्यत्य चैवेन्द्र च कयाशुमीनाशमयता तै0 ब्रा0 2.7.11.1
22. मणि मत्या पुरी पुरा वातापिस्तस्य चानुजः।। महा0 3.94.4।।
23. स ब्राह्मणं तपो युक्तमुवाच ....।। महा0 3.94.4।।
24. मेश रुपी च वातापि.............................।। वही 3.94.4।।
25. पितृन ददर्श गर्ते वै ....।। वही 3.94.14–17।।
26. स तस्य तस्य सत्वस्य ....।। महा0 3.44.20.21।।
27. स तस्य तस्य सत्वस्य ....।। महा0 3.44.20–21।।
28. गंगाद्वारमथागम्य भगवान् ....।। वही 3.95.15।।

29. अन्यथा नोपतिष्ठेयं .... ।। वही 3.95.19 ।।
30. तेषां ततो सुरश्रेष्ठ................................. ।। महा0 3.97.2–6 ।।
31. कालकेय भय संत्रस्तो .... ।। महा0 3.100.2.10 ।।
32. रघुनन्दन शर्माः वैदिक सम्पत्ति ।। पृ0 72
33. अद्रिराजं महाशैल .... ।। महा0 3.100.10–25 ।।
34. वासुदेव शरण अग्रवाल, वामन पुराण ए स्टडी, पृ0 40
35. महा0 वन 103–13, शान्ति0 342–51 महा0 आश्वमेधिक पर्व0 12.4.48
36. बहूनीन्द्र सहस्त्राणि समतीतानि वासव। महा0 शान्ति 244–55
37. M- winternitz, History of Indian Literature – P.402

सहायक ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद संहिता, वैदिक संशोधन मण्डल 1933–46 (सायण भाष्य सहित) पूना
2. तैत्तिरीय संहिता वैदिक संशोधन मण्डल 1970–81 (भट्ट भास्कर, सायण भाष्य सहित) पूना
3. काठक संहिता, स्वाध्याय मण्डल 1943 (व्याख्याकार – दामोदर सातवलेकर) बम्बई
4. मैत्रायणी संहिता, स्वाध्याय मण्डल 1846 ई0 (व्याख्याकार – दामोदर सातवलेकर) भारत मुद्रणालय आँधनगर, बम्बई
5. एतरेय ब्राह्मण, तारा प्रिन्टिग वर्क्स 1980 (सायण भाष्य सहित) (सम्पा0 एवं अनु0 डॉ0 सुधाकर मालवीय) वाराणसी
6. तैत्तिरीय ब्राह्मण, ओरिएण्टल पुस्तकालय 1913 ई0 (भट्टभास्कर भाष्य सहित) सीरीज, मैसूर
7. महर्षि व्यास, महाभारत भांकर नरहर जोशी, (टीका – नीलकण्ठ) चित्रशाला प्रेस पूना
8. महर्षि व्यास, महाभारत गीताप्रेस, गोरखपुर 6 भाग
9. रघुनन्दन शर्मा, वैदिक सम्पत्ति, बम्बई 1996
10. वासुदेव शरण अग्रवाल, वामन पुराण ए स्टडी 1978, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

❖◆❖